02 दिसम्बर 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 14
दिसम्बर(प्रथम), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की स्मृति में...

सहजता दिवस कार्यक्रम सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक २१ नवम्बर २०२१ को अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के जन्म दिवस के अवसर पर उनके उपकारों का स्मरण करते हुए 'सहजता दिवस' के रूप में एक समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मंगल सान्निध्य प्राप्त हुआ।

समारोह की अध्यक्षता महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान अशोकजी बड़जात्या ने की। आमंत्रित अतिथियों में श्रीमान अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्रीमान अशोकजी पाटनी सिंगापुर, अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ न्यासी श्रीमान एन. के. जैन खीचा जयपुर, नगर निगम के उपमहापौर पुनीतजी करणावत, डॉ. अखिलजी बंसल, पण्डित महावीरजी पाटील, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि उपस्थित रहे। समारोह का संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर एवं मंगलाचरण पण्डित दिव्यांश जैन अलवर ने किया।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व उपमहापौर पुनीतजी करणावत सहित अन्य

सर्वप्रथम पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सहजता दिवस का परिचय देते हुए अपने भावों को व्यक्त किया।

श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री अशोकजी पाटनी, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा,

(पृष्ठ 3 का शेष...)

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में...

नवपल्लव कार्यक्रम सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक १९ नवम्बर २०२१ को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के नवागन्तुक ४५वे बैच के विद्यार्थियों का परिचय सम्मेलन 'नवपल्लव' के रूप में हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की। अतिथियों में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा (ऑनलाइन), डॉ. अरुणजी शास्त्री बण्ड, डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्य, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, डॉ. प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित श्रीमंतजी नेज, पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि सभी अध्यापकगण उपस्थित रहे।

इस अवसर पर नवागन्तुक २८ छात्रों ने तत्त्वप्रचार की भावना व्यक्त करते हुए अपना परिचय दिया। साथ ही प्रत्येक कक्षा के चार-चार छात्रों ने आकर अपनी कक्षा के प्रत्येक छात्र का परिचय कराते हुए उनकी उपलब्धियों से सभा को परिचित कराया। जयपुर में कार्यरत स्नातक विद्वानों का परिचय पं. रूपेन्द्रजी शास्त्री ने दिया।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि विद्यार्थियों के वक्तव्य को सुनकर यह स्पष्ट है कि वे किसी के कहने से या किसी प्रकार के भ्रम से महाविद्यालय में नहीं आए हैं; अपितु तत्त्व की जिज्ञासा और महाविद्यालय की महिमा को जानते हुए उन्होंने यहाँ प्रवेश लिया है।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से स्वस्ति सेठी जयपुर व भव्या जैन दिल्ली ने एवं मंगलाचरण ज्ञायक जैन सागर व जय मुलावकर डासाला ने किया। निर्देशन एवं आभार प्रदर्शन महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(27) सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

छठे अध्याय का सार (कुदेव, कुगुरु और कुधर्म का प्रतिषेध)
(गतांक से आगे...)

यदि कोई कहे कि व्यंतरादिक देव गति के जीव हैं, उनके नियम से अवधिज्ञान पाया जाता है। वे उस ज्ञान से दुनियाभर की बातों को जानकर हम भक्तों का भला और पापियों का बुरा कर सकते है, इसलिए उनको पूजना चाहिए।

उनसे पंडितजी कहते हैं कि प्रथम तो उन्हें सर्व बातों का ज्ञान नहीं है और कदाचित् तुमसे संबंधित किसी बात का ज्ञान हो भी जाए और यदि उनकी कषायें तीव हों तो वे तुम्हारा सहयोग नहीं करेंगे। और यदि कदाचित् उनकी कषाय मन्द हो तो उनको तुम्हारा भला-बुरा करने का परिणाम ही नहीं होगा; अत: तुम्हारा कार्यसिद्ध करने के लिए उनके मध्यम जाति की कषाय होना चाहिए। और यदि कदाचित् वह भी हो; परन्तु कार्य सम्पन्न करने की शक्ति ना हो तो भी काम नहीं बनता। इतनी सब बातें हो; किन्तु तुम्हारे पुण्य का उदय ना हो तो भी काम नहीं बन सकता।

यहाँ कोई कहे कि हमने तो ऐसा सुना है कि छोटे से छोटे देव में भी चक्रवर्ती सम्राट से दस हजार गुणा अधिक बल होता है; अत: हम भक्तों के छोटे-छोटे काम करना तो उनके लिए साधारण-सी बात है।

उनसे पंडितजी कहते हैं कि अन्य जीव के शरीरादि को उसके पुण्य-पाप के अनुसार ही परिणमित कर सकते हैं। यदि उसके पुण्य का उदय हो तो रोगादि रूप नहीं परिणमा सकते और यदि उसके पाप का उदय हो तो उसका इष्ट नहीं कर सकते; इसलिए उनमें सर्व कार्य करने की शक्ति नहीं है।

तात्पर्य यह है कि यदि मेरे पुण्य का उदय है, तो कोई भी देव मुझे रंच मात्र भी दुखी करने में समर्थ नहीं है और यदि मेरे पाप का उदय है तो कितने ही देवी-देवताओं के चरण पकड़ लूँ, कोई मेरा भला नहीं कर सकता। जब मेरे ही पुण्य का उदय है, जब मैं स्वयं ही सौभाग्यशाली हूँ, तो मुझे किसी देवी-देवता के सामने गिड़गिड़ाने की क्या आवश्यकता?

एक सेठ कुछ भिखारियों को भीख दे रहा था। वहाँ किसी भिखारी ने भीख माँगने के लिए जैसे ही हाथ आगे बढ़ाया, तभी उस भिखारी के कान में एक वाक्य सुनाई दिया- "तू तो सेठ है, करोड़पति है।" इतना वाक्य कान में पडते ही उस भिखारी ने तुरन्त हाथ पीछे खींच लिया। उस समय यदि देने वाला सेठ उससे कहे कि इस बार तो ले लो; तो भी वह नहीं लेगा।

उक्त प्रसंग से यही बात समझनी चाहिए कि जिसे अपनी सामर्थ्य की ख़बर हो जाती है, वह फिर किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता। इसीप्रकार जिस कार्य को करने की सामर्थ्य स्वयं मेरे पास है, उसके लिए मैं किसी और का एहसान क्यों लूँ?

यहाँ कोई कहे कि भले ही वे हमारा भला-बुरा नहीं कर सकते; लेकिन उनमें इतनी शक्तियाँ तो हैं ही; इसलिए उनको पूजने में क्या समस्या है? पण्डितजी कहते हैं कि जब वह भला-बुरा कर ही नहीं सकते, तो तू क्यों अपनी वृत्ति भिखारियों जैसी रखना चाहता है। इसप्रकार व्यन्तरादि के पूजने का निषेध किया।

ज्योतिषी आदि को पूजने का निषेध....

कोई सूर्यादि को परमेश्वर का अंश मानकर पूजता है; परंतु उसमें तो एक प्रकाश की ही अधिकता दिखाई देती है। कोई चंद्रमादि को धन आदि के लिए पूजता है, यदि ऐसा होता तो सभी दरिद्र यही कार्य करें तथा ग्रहादि लगने के भय से उनको पूजता है। राहू की दशा चल रही है, मंगल भारी हो रहा है, शनि की साड़े साती चल रही है, केतू का प्रभाव दिखाई दे रहा है- ऐसा मानकर दान आदि अनेक अनुष्ठान करता है।

पण्डितजी कहते हैं कि सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह आदि अपनी योग्यता से गमनादि क्रिया करते हैं, उनके चलने से तेरे भले-बुरे का कोई सम्बन्ध नहीं है। जिसप्रकार हिरणादि गमन करते हैं और पुरुष के दाएं-बाएं आने पर सुख-दुख होने के आगामी **ज्ञान का** कारण होते हैं, किन्तु उनमें सुख-दुख देने की सामर्थ्य नहीं हैं। यहाँ पंडितजी ने हिरण का उदाहरण दिया है; क्योंकि उस समय हिरण आदि खुलेआम विचरण करते होंगे और उनके दाएं-बाएं आ जाने से लोग शुभ-अशुभ का ज्ञान कर लेते होगें। जैसे आज के समय में बिल्ली खुलेआम विचरण करती है और उसके रास्ता काटने पर जगत के लोग अशुभ हुआ मानते हैं। आज के समय में हिन्दुस्थान की हालत तो ऐसी है कि गाड़ियाँ रेड लाइट पर रुके या ना रुके; लेकिन बिल्ली के रास्ता काटने पर नियम से रूकती हैं।

उसीप्रकार ग्रहादिक भी स्वयं गमनादि करते हैं और जीव के यथासंभव योग को प्राप्त होने पर सुख दुख होने के आगामी ज्ञान का कारण बनते हैं, कुछ सुख-दुख देने में समर्थ नहीं है।

यद्यपि जिनधर्म में भी निमित्त ज्ञान की चर्चा की गई है; परन्तु वह बहुत सूक्ष्म एवं विस्तृत है। जैसे स्वर निमित्त ज्ञान, भू निमित्त

ज्ञान, भौम निमित्त ज्ञान आदि अनेक निमित्त ज्ञानों की चर्चा तिल्लोय पण्णत्ति के चौथे अधिकार में श्लोक नंबर १००४ से १०१६ तक की गई है। भविष्य जाना तो जा सकता है; लेकिन बदला नहीं जा सकता। जैसे बिल्ली ने रास्ता काटा, तो बिल्ली दाएं से बाएं गई या बाएं से दाएं, छह गज की दूरी पर थी या दस गज की दूरी पर, सफेद रंग की थी या काले रंग की, चूहे को पकड़ने के लिए भाग रही थी या किसी के भय से भाग रही थी इत्यादि अनेक बातें किसी निर्णय पर पहुचने में गर्भित होती हैं।

कोई कहे कि पूजने से भले ही मिथ्यात्व हो; लेकिन दान देने में क्या बुराई है? दान देना तो पुण्य है, सो भला ही है; उसे कहते हैं कि धर्म के लिए दान दिया जाए तो वह पुण्य है; लेकिन तू दुख के भय, सुख के लोभ से, संक्रांति के लिए दान देता है; इसलिए पाप ही है। इसप्रकार ज्योतिष देवों के पूजने का निषेध किया।

क्षेत्रपाल पद्मावती आदि को पूजने का निषेध....

यहाँ कोई कहे कि अन्य मत के अनुरागियों को ना सही; लेकिन जैनमत का अनुसरण करने वाले क्षेत्रपाल, पद्मावती यक्ष यक्षणि आदि को पूजने में तो कोई दोष नहीं है।

उनसे कहते हैं कि जैन परम्परा में तो संयम की पूजा होती है और वे संयमी नहीं हैं; इसलिए उनकी पूजा नहीं की जाती। यदि तू कहे कि सम्यकदृष्टि हैं; इसलिए पूजते हैं। यदि ऐसा है तो सर्वार्थसिद्धि के देव तो नियम से सम्यग्दृष्टि होते हैं, उनको क्यों नहीं पूजते? यदि तू कहे कि इनमें भक्ति की प्रधानता अधिक है; इसलिए इनको पूजते हैं तो जैसी भक्ति सौधर्म इंद्र में देखी जाती है, वैसी तो इनमें नहीं दिखती, तो उनकी पूजा क्यों नहीं करता? यदि तू कहे कि वे तीर्थंकर के खास व्यक्ति हैं; इसलिए इनको पूजते हैं, यदि ऐसा है तो समवशरण में तो इनका कोई अधिकार ही नहीं है; जबकि सौधर्म इंद्रादि का तो होता है। इसप्रकार क्षेत्रपाल पद्मावती आदि को पूजना गृहीत मिथ्यात्व है; इसप्रकार उनका निषेध किया।

अधिक क्या कहें गाय–सर्प आदि तिर्यंचों को पूजता है। जो प्रत्यक्ष अपने से हीन दिखाई देते हैं, उन्हें भी पूजने लग जाता है, कोई विचार विवेक नहीं हैं।

देखो तो मिथ्यात्व की महिमा लोक में अपने से नीचे को नमन करने में, उनको छूने मात्र से अपने को निंद्य मानता है। और यहाँ रोड़े आदि को पूजने में निंद्यपना नहीं मानता। कुदेवों का सेवन करते हुए हजारों विघ्न होते हैं, उन्हें तो नहीं गिनता और किसी काल में पुण्य के उदय से इसका कहा हो जाए तो कहता है कि इनके सेवन से यह सिद्ध हुआ। इसप्रकार की विचार हीनता प्रत्यक्ष दिखती है; सो मिथ्यात्व की महिमा ही है। यदि किसी को ऐसा विचार आए कि भले ही इनके मानने से कुछ कार्यसिद्धि ना हो; लेकिन कुछ बिगाड़ भी तो नहीं होता। उससे कहते हैं कि यदि बिगाड़ नहीं होता तो हम किसलिए निषेध करते, मिथ्यात्व दृढ़ होने से मोक्षमार्ग अति दुर्लभ हो जाता है यह एक बड़ा बिगाड़ है और दूसरा पाप का बंध तो होता ही है।

इसप्रकार कुदेवों को, व्यन्तरादि देवों को, गाय–सर्प आदि तिर्यंचों को पूजने का निषेध किया। (क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं श्रीमती कमलाजी भारिल्ल ने दादा के संदर्भ में अपने उद्गार व्यक्त किए।

वीडियो के माध्यम से प्राप्त श्री अनंतरायजी मुम्बई, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री पवनजी जैन मंगलायतन, श्री अजीतप्रसादजी दिल्ली, श्री प्रेमचंदजी बजाज, श्री महिपालजी ज्ञायक, श्री अतुलभाई खारा, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित बाहुबलीजी भोसगे एवं जम्बूकुमारजी के संदेश प्रसारित किए गए।

इस प्रसंग पर अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल पुरस्कार २०२१ की घोषणाएँ कर उन्हें वरिष्ट महानुभावों द्वारा सम्मानित किया गया।

वीडियो के माध्यम से 'सहज पुरुष की सहज जीवन यात्रा' का एक विहंगावलोकन किया गया। बड़े दादा व छोटे दादा के मिलन को दर्शाती हुई वीडियो प्रस्तुत की गई एवं पूर्विका जैन पुत्री श्रीमती परिणतिजी शास्त्री विदिशा द्वारा 'शुद्धातम है मेरा नाम' इस गीत को प्रस्तुत किया गया।

साथ ही टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने भी दादा के व्यक्तित्व को विभिन्न विषयों में ढालकर प्रस्तुत किया, जिसमें 'संघर्षों के घर्षण से उत्पन्न भारिल्ल' – समर्थ जैन हरदा, 'रतन रचनाओं का प्रारूप एवं विषय' – चेतन जैन गुढ़ाचंद्रजी, 'पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के आचार–विचार में सहजता' – संदेश जैन दिल्ली, 'रत्न स्वभाव के अनुरूप शैली' – नमन जैन हटा, 'रत्नों में अनूठी रत्नचंद शैली' – अरविंद जैन खड़ैरी एवं 'रतन कलम का कमाल' – स्वस्ति सेठी जयपुर ने अपने विचार व्यक्त किए।

कविताओं के माध्यम से अमन जैन खनियांधाना ने 'सहज पुरुष की आदर्श गाथा', अभिषेक जैन देवराहा ने 'दादा द्वय का अटूट वात्सल्य' एवं समकित जैन ईसागढ़ ने 'रत्न साहित्य में अनमोल रतन' विषय पर कविताएँ प्रस्तुत की। विद्यार्थियों द्वारा ही बड़े दादा की महानतम कृति 'विदाई की वेला' के सम्पूर्ण सार को अभिव्यक्त करने वाली एक सुंदर लघु नाटिका भी प्रस्तुत की गई।

आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

१) देवलाली (महा.) : पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक ११ से १९ नवम्बर तक अष्टान्हिका महापर्व का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री पंचमेरु नंदीश्वर मण्डल विधान, गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, वाल ब्र. हेमचंदजी देवलाली एवं पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना के प्रवचनों का लाभ मिला। समस्त कार्यक्रम पण्डित समकितजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित उर्विषजी शास्त्री देवलाली के सहयोग से सम्पन्न हुए।

२) उदयपुर (राज.) : यहाँ अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर श्री समयसार महामण्डल विधान का आयोजन बाल ब्र. नन्हेभैया सागर के विधानाचार्यत्व में किया गया। प्रात: मंगल कलश एवं जिनवाणी की स्थापना के साथ विधान का प्रारम्भ हुआ, जिसके आयोजनकर्ता श्री भंवरलाल गंगावत परिवार थे।

इस अवसर पर प्रतिदिन बाल ब्र. नन्हेभैया के प्रवचनों का एवं स्थानीय विद्वानों में पण्डित राजकुमारजी, डॉ. महावीरप्रसादजी, पण्डित खेमचंदजी, पण्डित गजेन्द्रजी के प्रवचनों का लाभ मिला। मंगल कलश स्थापनाकर्ताओं ने आगामी अष्टान्हिका तक नियमित स्वाध्याय सभा में उपस्थित रहने का नियम लिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित तपिशजी शास्त्री ने किया। आभार प्रदर्शन मंत्री श्री सुभाषजी जैन ने किया।

३) कुकमा (भुज) : यहाँ श्रीमद्राजचंद्र साधना केन्द्र में अष्टान्हिका महापर्व एवं श्रीमद्राजचंद्र जन्मजयंती के अवसर पर आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान सत्संग व १७० तीर्थंकर विधान दिनांक १६ से १९ नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री गांगभाई मोताजी का मंगल सान्निध्य एवं पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा का समागम प्राप्त हुआ। दैनिक कार्यक्रमों में विधान, समाधिमरण पर विशेष परिचर्चा, जिनेन्द्र भक्ति एवं पण्डित संजयजी शास्त्री, कोटा द्वारा वैराग्य से ओतप्रोत कथाओं लाभ मिला। १९ नबम्वर को श्रीमद्राजचंद्र जयंती के अवसर पर विशेष उत्सव मनाया गया।

४) नागपुर : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में डॉ. हीराचंदजी गडेकर परिवार हिवरखेड द्वारा अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के प्रवचनों के पूर्व पण्डित विजयकुमारजी राऊत रिठद, पण्डित विनितजी शास्त्री नागपुर, ब्र. अजयजी शिरपुर तथा विदुषी हर्षाजी वेखंडे के मार्मिक प्रवचन हुए। विधि–विधान के कार्य ब्र. आदेशजी कारंजा द्वारा सम्पन्न कराए गए।

५) नागपुर : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री पंचमेरु नंदीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पं. नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल द्वारा प्रात: धवला पुस्तक–१ तथा रात्रि में नाटक समयसार पर प्रवचन हुए। विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित चैतन्यजी शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुए।

६) विश्वास नगर (दिल्ली) : यहाँ अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर पंच परमागम विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्यरत्न द्वारा प्रात: समयसार की विशिष्ट गाथाओं पर, दोपहर में स्वास्थ्य व चरणानुयोग पर एवं रात्रि में द्रव्यसंग्रह के आधार से प्रथमानुयोग द्वारा जैनधर्म के मुख्य सिद्धान्त को समझाया गया। प्रतिदिन सुबह पंच परमागम विधान भी आयोजित किया गया। १४ नवम्बर को बिना औषधि के स्वास्थ्य रक्षा विषय पर २ घंटे का सत्र आयोजित किया गया, जिसमें श्रावकाचार के अनुरूप स्वास्थ्य हेतु अहिंसा के नुस्खे बताए गए।

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें...

पत्राचार पाठ्यक्रम की दिसम्बर २०२१ के अंतिम सप्ताह में होने वाली द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का विवरण निम्नानुसार है; परीक्षार्थी इसी के अनुसार तैयारी करें –

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष – १. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग– २
२. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग– ३

द्वितीय वर्ष – १. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग– २
२. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष – १. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
२. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष – १. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (१ से ४ अध्याय)
२. नयचक्र–पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
३. हरिवंशकथा + भ. महा. और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष – १. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (६ से ९ अध्याय)
२. नयचक्र–उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक)
३. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

नोट :– सभी परीक्षार्थियों को उनके प्रश्नपत्र केन्द्र/उनके पते पर दिसम्बर के तृतीय सप्ताह तक डाक द्वारा भेज दिए जायेंगे; यदि २५ दिसम्बर तक भी पेपर न मिले तो जयपुर कार्यालय से सम्पर्क करें– ७७४२३६४५४१

पण्डित रतनचंद भारिल्ल पुरस्कार - २०२१

बड़े दादा के नाम से विख्यात अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के ८९ वे जन्म दिवस के अवसर पर जयपुर में स्थित पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में चार उदीयमान व्यक्तित्वों को विभिन्न संस्थाओं द्वारा पण्डित रतनचंद भारिल्ल पुरस्कार से सम्मानित किया गया एवं पण्डित रतनचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पुरस्कार स्वरूप नगद राशि भी प्रदान की गई।

१) पण्डित विकास जैन शास्त्री, बानपुर को जीवन शिल्प इंटर कॉलेज के रूप में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व समाजोत्थान हेतु कार्य करने एवं ग्रामीणक्षेत्र में संस्कारित शिक्षा एवं कुशल लेखन हेतु अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ द्वारा पण्डित रतनचन्द भारिल्ल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ५५०० रूपये की नगद राशि भी प्रदान की गई।

२) प्रो. मयंककुमार जैन, अशोकनगर को धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं समाज के प्रति पत्रकारिता के माध्यम से वैचारिक योगदान देने एवं सामाजिक चेतना जागृत करने हेतु आपको अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ द्वारा पण्डित रतनचन्द भारिल्ल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ५५०० रूपये की नगद राशि भी प्रदान की गई।

३) पण्डित समकित जैन शास्त्री, खनियांधाना को कोविड महामारी के समय में ऑनलाइन माध्यम से पण्डित टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला, शिविरों एवं कार्यक्रमों के संचालन के साथ–साथ अन्य अनेक गतिविधियों में उत्साह पूर्वक सम्मिलित होकर जिनशासन की प्रभावना में अपना योगदान देने हेतु सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट द्वारा पण्डित रतनचन्द भारिल्ल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ११००० रूपये की नगद राशि भी प्रदान की गई।

४) पण्डित समकित जैन शास्त्री, ईसागढ़ को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में अध्ययन काल के दौरान पूर्ण अनुशासन में रहते हुए पाठ्य एवं पाठ्येतर गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए, समय–समय पर वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में योगदान हेतु श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा पण्डित रतनचन्द भारिल्ल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ५१०० रूपये की नगद राशि भी प्रदान की गई।

जैनपथ प्रदर्शक परिवार आपके सम्मान में हर्षित होते हुए आपके उन्नति पूर्ण भविष्य के भावना व्यक्त करता है।

आत्मार्थी छात्रों के लिए सुनहरा अवसर

एक कदम जीवन निर्माण की ओर.....

श्री समयसार विद्या निकेतन आत्मायतन, ग्वालियर

भगवान महावीर स्वामी के शासनकाल में तथा इस युग के प्रधान आचार्यश्री कुन्दकुन्द देव के प्रभावना योग में, बाल ब्र. रविन्द्रजी आत्मन् की पावन प्रेरणा से एवं दादाश्री डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के पथप्रदर्शन में श्री सिद्धक्षेत्र गोपाचल की तलहटी में स्थित ग्वालियर महानगर में श्री समयसार विद्यानिकेतन संचालित हो रहा है। जो तत्त्वरुचिवन्त आत्मार्थी छात्र, सुयोग्य विद्वान व कुशल शिक्षकों के मार्गदर्शन में रहकर अलौकिक शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक, साहित्यिक, नैतिक, खेल–व्यायामादि विधाओं में पारंगत होकर अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहते हैं। वे अंग्रेजी माध्यम से कक्षा सातवीं में प्रवेश हेतु शीघ्र सम्पर्क करें। ऑनलाइन फॉर्म भरने के लिए नीचे दिए हुए नम्बरों पर कॉल करें।

साक्षात्कार शिविर फरवरी २०२२ में सम्पन्न होगा।

प्राचार्य–श्रीमती अंजली जैन	निर्देशक–पं. शुद्धात्म जैन शास्त्री
0751 4075035	9311679663
प्रबंधक–पं. संयम शास्त्री	अधीक्षक–पं. विशेष शास्त्री
9399487944	9893224022

वैराग्य समाचार

१) सरदारशहर निवासी **श्री अभयकरणजी सेठिया** ने ०९ नवम्बर २०२१ को शान्त परिणामों सहित देह त्याग किया। वे दृढ धर्मानुरागी थे। विगत ३० वर्षों से सांसारिक रुचि त्याग कर निरन्तर जिनवाणी श्रवण–मनन में निरत रहते थे। पिछले कुछ महिनों से शारीरिक रूप से अस्वस्थ होने पर भी 'मैं रोगों से भिन्न हूँ' – इसप्रकार की भेदविज्ञान की धारा उनको निरन्तर चलती रहती थी। उनकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक सर्वोदय ट्रस्ट को एक विद्यार्थी के शिक्षण हेतु ३०,०००/– रुपये प्राप्त हुए; एतदर्थ धन्यवाद!

२) वर्धा निवासी **श्रीमती विजयाबाई** वर्धमानजी क्षीरसागर का दिनांक ११ नवम्बर २०२१ को शांत परिणामों से देहपरिवर्तन हुआ। आप अत्यन्त सरल परिणामी एवं स्वाध्यायी महिला थीं। अन्तिम समय में आयोजित सभी ऑनलाइन शिविर, प्रवचन एवं स्वाध्यायमाला का आपने खूब लाभ लिया।

दिवंगत आत्मायें अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करें–यही भावना।

प्रथम शतक : दोहा शतक

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

देव–शास्त्र–गुरु

(दोहा)

यह सब होता है सहज, होनहार अनुसार।
काललब्धि भी सहज ही, होय समय अनुसार।। ४४।।

पुरुषारथ भी सहज ही, हो स्वभाव अनुसार।
निमित्त सहज ही प्राप्त हों, कारज के अनुसार।। ४५।।

पाँचों ही समवाय का, सहज समागम होय।
सहजभाव से सहज ही, आतम अनुभव होय।। ४६।।

आतम के अनुभवी का, जब बाहर उपयोग।
शुद्ध भाव होता नहीं, होता शुभ उपयोग।। ४७।।

जैसा हो निश्चय धरम, वैसा ही व्यवहार।
उसके ही अनुसार हों, सब आचार–विचार।। ४८।।

ज्ञानीजन का आचरण, और सभी व्यवहार।
खान–पान सभ्याचरण, आगम के अनुसार।। ४९।।

निश्चय अर व्यवहार में, होय अपूरब योग।
जैसे अन्तर भाव हों, वैसे ही संयोग।। ५०।।

निज आतम के अनुभवी, निश्चय सम्यग्दृष्टि।
हों चौथे गुणथान में, अविरत सम्यग्दृष्टि।। ५१।।

आतम अनुभव के बिना, सम्यग्दर्श न होय।
सम्यग्दर्शन के बिना, सम्यग्ज्ञान न होय।। ५२।।

सम्यग्दर्शन–ज्ञान बिन, संयम कैसे होय?।
संयम ही चारित्र है, वह भी कैसे होय?।। ५३।।

इन तीनों की एकता ही है मुक्तिमार्ग।
इन तीनों की पूर्णता को ही कहते मुक्ति।। ५४।।

पहला आतम तत्त्व है, अन्तिम मुक्ति तत्त्व।
जिन–आगम से जानिये, और न कोई युक्ति।। ५५।।

जिन–आगम अभ्यास ही, तीन लोक में सार।
उसके ही अभ्यास से, होंगे भव से पार।। ५६।।

भव दु:खों से भव्यजन, यदि होना है पार।
जिन–आगम अभ्यास ही, एकमात्र आधार।। ५७।।

जिन–आगम अभ्यास बिन, तत्त्वज्ञान न होय।
तत्त्वों के अभ्यास बिन, सम्यग्दर्श न होय।। ५८।।

जिन–आगम जिनदेव की, दिव्यध्वनि का सार।
जिन–आगम में आ गया, नव तत्त्वों का सार।। ५९।।

नव तत्त्वों की ज्योति में, छुपा जो आतम तत्त्व।
वह ही हूँ 'मैं' जान लो, यह अध्यात्म रहस्य।। ६०।।

अध्यातम का यह रहस, जिन शास्त्रों में होय।
उनको परमागम कहें, उनका ही उपयोग।। ६१।।

उपयोगी हे भव्यजन !, उनका सद्–उपयोग।
शेष सभी तो जानिये, बन्ध–भोग–उपभोग।। ६२।।

बन्ध–भोग–उपभोग की, कथा अनन्ती बार।
सुनी सुनाई जगत को, उसमें कोई न सार।। ६३।।

परम शुद्ध अध्यात्म की, कथा है मंगल रूप।
आत्मतत्त्व प्रतिपादनी, अद्भुत और अनूप।। ६४।।

समयसारमय आतमा का एकत्व–विभक्त।
जिसमें प्रस्तुत किया हो, वह ही है अध्यात्म।। ६५।।

अधि माने है जानना, आतम माने आत्म।
आतम का ही जानना, कहलाता अध्यात्म।। ६६।।

जिसमें आतम की कथा, वह अध्यातम होय।
इस अध्यातम की कथा, परमागम में होय।। ६७।।

(क्रमश:)

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

11 – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 105 – ज्ञानाकारों को ज्ञेयाकार क्यों कहा जाता है? उदाहरण सहित बताएँ।

उत्तर – यह बताने के लिए कि अमुक ज्ञान पर्याय में ज्ञेय अमुक पदार्थ ही बने हैं। जैसे – चश्मे को जानने वाले ज्ञान को चश्माकार इसलिए कहा जाता है कि जिससे यह पता चल सके कि इस ज्ञान का ज्ञेय चश्मा ही बना है, अन्य पदार्थ नहीं। बस इसीकारण ज्ञानाकारों को ज्ञेयाकार कहा जाता है।

प्रश्न 106 – पर के साथ का ज्ञेय–ज्ञायक संबंध अशुद्धि का जनक क्यों है?

उत्तर – पर के साथ का ज्ञेय–ज्ञायक संबंध व्यवहार होने से अशुद्धि का जनक है।

प्रश्न 107 – ज्ञेय–ज्ञायक संबंध कितने प्रकार का है? नाम बताओ।

उत्तर – ज्ञेय–ज्ञायक संबंध दो प्रकार का होता है – एक पर के साथ का, दूसरा स्व के साथ का। ज्ञायक आत्मा पर को भी जानता है और स्व को भी जानता है। पर के साथ वाला ज्ञेय–ज्ञायक संबंध अशुद्धि का जनक है, स्व के साथ वाला शुद्ध है।

प्रश्न 108 – ज्ञायक भाव में दर्शन, ज्ञान, चारित्र आदि गुणभेद का निषेध क्यों किया गया है?

उत्तर – गुणों के भेदों में जाने से विकल्पों की उत्पत्ति होती है, इसकारण अनुभूति के विषयभूत ज्ञायक भाव में गुणभेद का निषेध किया गया है।

प्रश्न 109 – ज्ञायक आत्मा में गुणभेद के निषेध द्वारा किस नय के विषय का निषेध किया जा रहा है?

उत्तर – ज्ञायक आत्मा में गुणभेद के निषेध द्वारा अनुपचरित सद्भूत व्यवहार नय के विषय का निषेध किया जा रहा है।

प्रश्न 110 – छठवीं गाथा में प्रमत्त अप्रमत्त पर्यायों द्वारा किस नय के विषय का निषेध किया गया था?

उत्तर – छठवीं गाथा में उपचरित सद्भूत व्यवहार नय का निषेध किया गया था।

प्रश्न 111 – असद्भूत व्यवहार नयों का निषेध किस गाथा की टीका में किया गया है?

उत्तर – उपचरित और अनुपचरित असद्भूत व्यवहार नयों का निषेध तीसरी गाथा की टीका में किया गया है और परद्रव्यों से भिन्न उपासित होता हुआ कहकर छठवीं गाथा की टीका में भी कर दिया गया है।

तीर्थयात्रा एवं १७० तीर्थंकर विधान सम्पन्न

दिनांक १ से ८ नवम्बर तक तीर्थवंदना तीर्थयात्रा संघ **नागपुर** द्वारा इंदौर, गोम्मटगिरि, बनेड़िया, सिद्धवरकूट, सनावद, ऊन, पावागिरि, बावनगजा आदि तीर्थक्षेत्रों के जिनमंदिरों के दर्शन किए गए। ३ नवम्बर को सिद्धवरकूट में लघु १७० तीर्थंकर विधान हुआ एवं ४ नवम्बर को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव मनाया। प्रतिदिन पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री सातपुते के छहढाला एवं भगवान महावीर के जीवन प्रसंगों से सम्बन्धित प्रवचनों का लाभ मिला।

यात्रा संघ ने पूजन, भक्ति, प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिससे यात्रा ने शिविर का रूप ले लिया। समस्त कार्यक्रम श्री कमलाकरजी मारवडकर एवं श्री पुष्पदंतजी नखाते ने कराए। संघ का नेतृत्व श्री सुरेन्द्रजी नखाते ने किया।

पण्डित टोडरमलजी स्मृति सभा

नागपुर : यहाँ १४ नवम्बर को श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट द्वारा पण्डित टोडरमलजी की स्मृति सभा आयोजित हुई। अध्यक्ष श्री जयकुमारजी देवड़िया एवं प्रमुख अतिथि श्री सुधीरजी जैन कटनी थे। इस प्रसंग पर पं. विपिनजी शास्त्री, पं. श्रुतेशजी सातपुते, पं. सुदर्शनजी शास्त्री, पं. मोहितजी शास्त्री, पं. संदीपजी जैन, विदुषी प्रतीतिजी मोदी, विदुषी लक्ष्मीजी टक्कामोरे, डॉ. विमलाजी सिंघई, श्री प्रियदर्शनजी जैन व श्रीमती प्रेमलताजी मोदी ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत कर टोडरमलजी को नमन किया।

इस अवसर पर सत्पथ फाउण्डेशन द्वारा पण्डित टोडरमलजी की ३००वी जन्मजयंती के उपलक्ष्य में निर्मित प्रश्नमंच का विमोचन एवं वितरण हुआ। संचालन पण्डित रवींद्रजी महाजन, मंगलाचरण हेमंतजी वायकोस एवं आभार प्रदर्शन श्रुतेशजी सातपुते ने किया।

महाविद्यालय के संगीत सम्राट

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत दिनांक १४ नवम्बर २०२१ को भजन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

प्रतियोगिता में अध्यक्ष पद को श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल एवं निर्णायक पद को पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री ने सुशोभित किया। दिव्यांश जैन, अलवर द्वारा संचालित इस प्रतियोगिता का मंगलाचरण रितेश जैन ने किया।

तीन चरणों के माध्यम से परिष्कृत हो संदेश जैन दिल्ली ने प्रथम, संयम पुजारी खनियांधाना व समकित जैन ईसागढ़ ने द्वितीय एवं राहुल जैन, अमायन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंत में पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने आभार प्रदर्शन किया।

ध्यान संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर पण्डित अरूणकुमारजी मोदी परिवार, सागर के विशेष सहयोग एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री, नागपुर के निर्देशन में दिनांक १७ से २१ नवम्बर २०२१ तक ध्यान विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई।

पाँच सत्रों में आयोजित इस संगोष्ठी में समाज के तत्त्वाभ्यासी विद्वानों द्वारा ध्यान के स्वरूप का विभिन्न दृष्टिकोणों से अवलोकन किया गया, जिनकी अध्यक्षता बाल ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित धर्मेंद्रजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा द्वारा की गई।

२१ नवम्बर को आयोजित समापन समारोह में मुख्य रूप से तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मंगल सान्निध्य एवं प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ। सभा में पण्डित प्रदीपजी झांझरी, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, श्री अनंतराय ए. सेठ मुंबई, श्री बसंतभाई दोषी मुंबई, श्री अजीतप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री अजीतजी जैन बड़ौदा, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा एवं पण्डित संजयजी शास्त्री (सर्वोदय अहिंसा) जयपुर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. राकेशजी शास्त्री, नागपुर एवं मंगलाचरण कु. श्वेतल सुनीलकुमार जैन, राजकोट ने किया। समस्त सत्रों में पण्डित अरूणकुमारजी मोदी द्वारा विद्वानों एवं सभासदों का आभार प्रदर्शन किया गया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

जैन समाज की ६ हस्तियों को पद्मश्री

जैन समुदाय एक सुशिक्षित एवं अहिंसक शांतिप्रिय समुदाय है। जनगणना के आंकड़े भले ही जैनों की जनसंख्या ४५ लाख के आसपास बता रहे हो; परन्तु किसी समय इनकी संख्या करोड़ों में थी और इसकी तूती बोलती थी। हाल ही में देश के सेवाभावी महानुभावों को राष्ट्रपति श्री रामनाथजी कोविंद द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसमें जैन समाज की भागीदारी ६% रही। डॉ. नेमिनाथ जैन को कृषि एवं शिक्षा के क्षेत्र में, डॉ. शांति जैन को कला के क्षेत्र में, श्री विमलकुमार जैन को समाज सेवा के लिए, प्रोफेसर सुधीरकुमार जैन को विज्ञान एवं इंजीनियरिंग के लिए, डॉ. प्रकाश कोठारी को साहित्य और शिक्षा के लिए एवं डॉ. मीनाक्षी जैन को साहित्य एवं शिक्षा में योगदान हेतु भारत सरकार द्वारा नवाजा गया। स्मरणीय है कि जैन समाज का भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में तो विशेष योगदान है ही, साक्षरता की दृष्टि से भी यह समाज पीछे नहीं है। **- अखिल बंसल**

एक शिष्य की भावाभिव्यक्ति

आदरणीय दादा! चरण स्पर्श! मैंने पूरा प्रवचन मनोयोगपूर्वक सुना। आपके श्रीमुख से मेरे लिए जो आशीर्वाद निकला, वह मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है। अत: कृतज्ञ हूँ। घर पर बिलकुल स्वस्थ अनुभव कर रहा हूँ। सावधानी के लिए डॉक्टर ने कभी-कभी ऑक्सीजन लेने का निर्देश दिया है। ज्यादा बोलने और जनसम्पर्क से बच रहा हूँ। सन् ७९ से जो क्रमबद्ध, अकर्ता स्वभाव और सहज परिणमन आदि सिद्धान्त रत्न जो पूज्य गुरुदेव के प्रताप से प्राप्त हुए उनकी अपूर्व गहराई और भाव भासन के सहज प्रयोग इन १५ दिनों में हुए। आप सन्तुष्ट हो सकते हैं कि आप जो सन्देश देना चाहते हैं, मैं उसे आत्मसात करने में सफल होने का प्रयास कर पाया। पुन: आभार एवं प्रणाम। इस विश्वास की झलक मेरे सर्वज्ञ विधान में मिल सकती है। **- अभयकुमार शास्त्री, देवलाली**

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2021

प्रति,

खुरई नगर में गौरवमयी कदम ! !

चलों करें हम मानस्तम्भ वंदना ! !

चलों करें हम वेदी प्रतिष्ठा महोत्सवपूर्वक धर्माराधना ! !

भावभीना निमंत्रण

श्री 1008 चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ भगवान के जन्म, तपकल्याणक एवं मल्लिनाथ भगवान के केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव के पावन प्रसंग पर सकल दिगम्बर जैन समाज एवं श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल के संयुक्त तत्त्वावधान में

श्री 1008 पार्श्वनाथ मानस्तम्भ जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव

पौष कृष्ण तृतीया, बुधवार, 22 दिसम्बर 2021 से

पौष कृष्ण पंचमी, शुक्रवार, 24 दिसम्बर 2021 तक

महोत्सव स्थल-गुरुकुल परिसर, खुरई

निवेदक : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल, खुरई

नोट- विधान में बैठने हेतु इच्छुक महानुभाव गुरूकुल कार्यालय से पंजीयन प्रपत्र प्राप्त करके उसे 15 नवंबर 2021 तक भरकर जमा करें ।